4

यीशु, परमेश्वर का पुत्र

मसीहियत का आधार यह सच्चाई है कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है। हमारे धर्म का केन्द्र मसीह है। वह हमारे विश्वास की नींव (1 कुरिन्थियों 3:11), हमारे प्रचार का विषय (प्रेरितों 8:35; कुरिन्थियों 1:23), हमारा अंगीकार (मत्ती 10:32) और हमारी आशा का आधार है (1 तीमुथियुस 1:1)। इसलिए, उसमें दृढ़ विश्वास होना अति आवश्यक है (यूहन्ना 8:24)। मसीह के ईश्वरीय होने पर विश्वास करने के हमारे पास ढेरों कारण हैं। विश्वास के लिए बहुतायत से दिए गए प्रमाणों के अतिरिक्त परमेश्वर ने हमें और कहीं से विश्वास पाने के लिए नहीं कहा (यूहन्ना 20:31)। प्रमाण पक्का है और उस पर सदियों से लाखों लोगों ने विश्वास किया है। इस पाठ में यीशु पर विश्वास करने के लिए कि वह परमेश्वर का पुत्र है, कुछ कारण प्रस्तुत हैं। उन्हें ध्यान से देखें। यदि आपका विश्वास पहले ही दृढ़ है, तो शांत होकर प्रार्थना कीजिए जैसे चेलों ने की, ''हे प्रभु मेरा विश्वास बढ़ा।'' यदि आप शंकाओं में घिरे हुए हैं तो उस (मरकुस 9:24ख) पिता की तरह प्रार्थना कीजिए जिसके बेटे को अशुद्ध आत्मा ने जकड़ा हुआ था, ''हे प्रभु, मैं विश्वास करता हूं। मेरे अविश्वास का उपाय कर।''

क्योंकि वह पुराने नियम की भविष्यवाणी को पूरा करता है

यीशु के जन्म से कई वर्ष पूर्व की गई भविष्यवाणियों पर ध्यान करें। उसके जन्म की भविष्यवाणी की गई थी। उसकी वंशावली में इब्राहीम, यहूदा, और दाऊद शामिल हैं (उत्पत्ति 12:3/मत्ती 1:2; उत्पत्ति 49:10/मत्ती 1:2, 6)। इब्राहीम के वंशज कई

थे, परन्तु भविष्यवाणी में परिवार का विशेष स्थान था (यिर्मयाह 23:5; यशायाह 11:1/मत्ती 1:6)। कुंवारी से उसके जन्म की भविष्यवाणी यशायाह 7:14 में की गई और मत्ती 1:18-25 में पूरी हुई। उसके जन्म स्थान के लिए बैतलहम को चुना गया था (मीका 5:2)। यह भी भविष्यवाणी की गई कि उसके जन्म के साथ बहुत से बच्चों की हत्या होगी (यिर्मयाह 31:15/मत्ती 2:16-18)।

भविष्यवक्ताओं ने उसके मिस्र में जाने (होशे 11:1/मत्ती 2:13-15), गलील में उसके जीवन (यशायाह 9:1, 2/मत्ती 4:12-16) और यरूशलेम में उसके विजयी प्रवेश (जकर्याह 9:9/मत्ती 21:1-11) के बारे में पहले ही बता दिया था। उसके काम की भविष्यवाणी भी की गई थी। भविष्यवक्ताओं ने कहा था कि उसके अग्रदूत उसके आगे-आगे चलेंगे (मलाकी 3:1; यशायाह 40:3/मत्ती 3:1-3)। वे भविष्यवाणियां चंगाई की उसकी सेवकाई (यशायाह 53:5/मत्ती 8:16, 17), उसकी शिक्षा और दृष्टांतों (यशायाह 6:9, 10/मत्ती 13:10-17), अन्यजातियों में उसके मिशन (यशायाह 42:1-4/मत्ती 12:15-21), और शासकों द्वारा उसके ठुकराए जाने के बारे में बताती हैं (भजन संहिता 118:22/यूहन्ना 1:11)।

भविष्यवाणी में यीशु की मृत्यु को बड़े विस्तार से चित्रित किया गया। पुराने नियम में चांदी के तीस सिक्कों की खातिर (जकर्याह 11:12/मत्ती 26:14-16) एक मित्र द्वारा उसके पकड़वाये जाने की तस्वीर दिखाई गई है (भजन संहिता 41:9/मत्ती 26:47-50)। प्राचीन ग्रंथों में पहले ही बता दिया गया कि उसने कैसे अपने शत्रुओं के सामने पेश होना था (यशायाह 53:7/मत्ती 27:12, 14), कैसे उसकी मृत्यु होनी थी (भजन संहिता 22:16/मत्ती 27:35क), और कैसे चिट्ठियां डाल कर उसके कपड़े बांटे जाने थे (भजन संहिता 22:18/मत्ती 27:35ख,ग)। मरते समय बोले जाने वाले उसके शब्दों (भजन संहिता 22:1/मत्ती 27:46), उसकी हड्डियों के न टूटने (भजन संहिता 34:20/यूहन्ना 19:33), उसकी पसली के बेधे जाने (जकर्याह 12:10/ यूहन्ना 19:37), उसके गाड़े जाने (यशायाह 53:9/मत्ती 27:57-60), उसके जी उठने (भजन संहिता 16:10/लूका 24:1-9; प्रेरितों के काम 2:25-32), और उसके ऊपर उठाये जाने (भजन संहिता 68:18/लूका 24:50-53) की भी भविष्यवाणी हुई थी।

भविष्यवक्ताओं के लिए यह कहना तो आसान था कि मुक्तिदाता आएगा। परन्तु जब उन्होंने तीन सौ से अधिक विशेष बातें जोड़ दीं तो उन्होंने निश्चितता का एक ऐसा ढांचा बना दिया जिसका इन्कार नहीं किया जा सकता।

विचार कीजिए कि इन भविष्यवाणियों के पूरा होने का क्या अर्थ है। मनुष्य की दूर-दृष्टि और बुद्धि भविष्य की घटनाओं के चौबीस घण्टे पूर्व तक पूरे निश्चय के साथ नहीं झांक सकती। राजनैतिक पण्डित देश भर में फैले अपने प्रतिनिधियों के द्वारा कभी-कभी चुनाव के परिणाम की भविष्यवाणी कर सकते हैं। लेकिन यीशु के बारे में ये भविष्यवाणियां तो ऐसे हैं जैसे कोई पूर्व सूचना दे रहा हो कि अब से चार सौ वर्ष बाद राष्ट्रपति कौन होगा, उसके जन्म का स्थान, उसका खानदान, उसकी शिक्षा, उसका कार्यकाल, और उसकी मृत्यु का स्थान और यह कि उसकी मृत्यु कैसे होगी।

सच्ची भविष्यवाणी को परखा जा सकता है, क्योंकि यह भविष्य की घटनाओं का रहस्योद्घाटन करती है। इसमें वे विवरण शामिल होते हैं, जो अकस्मात पूरे नहीं हो सकते। भविष्यवाणी को सच तभी माना जा सकता है जब उसकी ऐतिहासिकता प्रमाणित हो जाए। कोई भी प्रमाण लिखित हो या मौखिक, भविष्यवाणी के पूरा होने से तर्क की इस सामर्थ को अलग नहीं कर सकता। इससे एक तो यह प्रमाणित होता है कि यीशु ईश्वरीय था और दूसरा यह कि जिन लोगों ने ये भविष्यवाणियां लिखीं उन्हें आत्मा की प्रेरणा थी।

क्योंकि परमेश्वर होने के उसके दावे उसके कामों से मेल खाते हैं

यीशु ने अपने बारे में स्पष्ट दावे किए। उसने कहा कि वह इब्राहीम से पहले था (यूहन्ना 8:58), कि वह संसार से पहले परमेश्वर के साथ था (यूहन्ना 17:5, 24), कि वह स्वर्ग से आया (यूहन्ना 6:38, 62), कि उसके पास स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार है (मत्ती 28:18)। वह किसी व्यक्ति का अवतार नहीं था, जिसने पहले कभी जन्म लिया हो; बल्कि वह स्वयं परमेश्वर-मनुष्य बन कर इस पृथ्वी पर आया (यूहन्ना 1:1-18)। बहुत से लोग जो उसके परमेश्वर होने का इन्कार करते हैं, वे उसे केवल एक ''ज़ला'' व्यक्ति ही कहते हैं। परन्तु यदि वह, वह नहीं था, जिसका उसने दावा किया तो वह झूठा और धोखेबाज़ था - निश्चय ही वह ''भला'' व्यक्ति नहीं हो सकता!

उसके कामों ने दिखाया कि उसके दावे सच्चे थे। यीशु ने अनेक आश्चर्यकर्म किए। बाइबल के इतिहासकारों ने उसके चमत्कारी कार्यों की साक्षी दी है (मत्ती 11:4, 5; यूहन्ना 20:30, 31) यहां तक कि धर्मनिरपेक्ष इतिहासकारों ने भी साक्षी दी

है कि उसने चमत्कारी कार्य किए। उसने कहा ''जगत की ज्योति मैं हूं'' (यूहन्ना 8:12क); फिर उसने ज्योति देखने के लिए अन्धों को ठीक किया (यूहन्ना 9:6, 7)। उसने कहा, ''जीवन की रोटी मैं हूं'' (यूहन्ना 6:35क), और उसने कुछ रोटी और दो मछलियों के साथ पांच हज़ार लोगों को भरपेट खाना खिलाया। उसने कहा, ''पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूं'' (यूहन्ना 11:25क); फिर उसने लाज़र को मुर्दों में से ज़िंदा किया (यूहन्ना 11:43, 44)।

उसने निष्पाप जीवन व्यतीत किया

जो लोग यीशु को जानते थे, उनका दावा था कि उसने निष्पाप जीवन व्यतीत किया। इन लोगों को परमेश्वर के आत्मा की प्रेरणा मिली थी!

> क्योंकि हमारा ऐसा महायाजक नहीं जो हमारी निर्बलताओं में हमारे साथ दुखी न हो सके। वरन् वह सब बातों में हमारी नाईं परखा गया, तो भी निष्पाप निकला (इब्रानियों 4:15)।
>
> न तो उसने पाप किया, और न उसके मुंह से छल की कोई बात निकली (1 पतरस 2:22)।

उसके जीवन का अध्ययन करने वालों ने उसे उत्तम कहा (लूका 18:18)। यहां तक कि उसके शत्रु जो निरन्तर उसमें दोष ढूंढते रहते थे, उन्हें भी उसमें भलाई ही मिलती थी। उसने बहुत ही असाधारण बात की, उन्हें चुनौती दी कि वे उसकी जांच करके देखें यदि वे उसमें कोई दोष ढूंढ सकते हों (यूहन्ना 8:46क)।

उसकी भलाई को उसकी मृत्यु के समय स्वीकारा गया। पीलातुस की पत्नी (मत्ती 27:19), पीलातुस (मत्ती 27:23), हेरोदेस (लूका 23:14), क्रूस पर डाकू (लूका 23:41), सूबेदार (मत्ती 27:54), और यहां तक कि यहूदा (मत्ती 27:4) की टिप्पणियों पर भी ध्यान दें ।

संसार पर उसके जीवन के निरन्तर प्रभाव के कारण

अनेक स्मरणचिह्न उसके जीवन को महिमा देते हैं: प्रभु का दिन [रविवार]

(प्रकाशितवाक्य 1:10), प्रभु भोज (1 कुरिन्थियों 11:20-29; मत्ती 26:26-28); बपतिस्मा (रोमियों 6:3-5), और यहां तक कि हमारे कैलेण्डर की तिथि भी (ईस्वी पूर्व और ईस्वी सन अर्थात मसीह से पहले और मसीह के बाद)।

ऐसा कोई चिह्न न होने पर भी जिसे मनुष्य महान समझता है, वह निर्विवाद रूप से संसार का सबसे सर्वश्रेष्ठ पुरुष है। उसके पास न कोई पैतृक संपत्ति, न विधिवत शिक्षा (यूहन्ना 7:15), न धन, न राजनैतिक अथवा सैन्य शक्ति, और न ही शारीरिक शौर्य था; परन्तु फिर भी पिछली बीस शताब्दियों में जो प्रभाव उसने मनुष्यजाति पर डाला है, उसमें कोई संदेह नहीं कर सकता है। यदि वह केवल मनुष्य होता तो भला क्या संसार उसके जैसा आज तक कोई और पैदा नहीं कर सकता था? संसार ने दो हज़ार वर्ष में बहुत उन्नति की है। उन्नत शिक्षा होने पर भी संसार सच्ची अगुआई का भूखा है। हर कोई यीशु मसीह की तरफ देख सकता है; वही मार्ग है। वह सब लोगों के लिए सब कुछ है और रहेगा। ''उसका नाम अद्‌भुत युक्ति करने वाला, पराक्रमी परमेश्वर, अनन्तकाल का पिता, और शान्ति का राजकुमार रखा जाएगा'' (यशायाह 9:6ख)।

सारांश

निस्संदेह, यीशु परमेश्वर का पुत्र है। यह विश्वास करने के लिए कि वह परमेश्वर का पुत्र है, इन विचारों की और परख करें। विश्वास करें कि वह है, और उसके द्वारा अपना जीवन परमेश्वर को दे दें।

अध्ययन के लिए प्रश्न

(उत्तर पृष्ठ *233* पर)

1. मसीहियत का आधार कौन सी सच्चाई है?
2. यीशु के जन्म, जीवन और मृत्यु की भविष्यवाणी बड़े विस्तार से बताई गई, कुछ उदाहरण दें।
3. यीशु के बारे में पूरी हुई भविष्यवाणियां क्या प्रमाणित करती हैं?
4. यीशु ने अपने बारे में स्पष्ट विलक्षण दावे किये। उनमें से कुछ कौन से थे?
5. यीशु के काम उसकी बातों से कैसे मेल खाते थे?
6. कुछ उदाहरण दें कि यीशु की भलाई को कैसे स्वीकारा गया?

7. यीशु का जीवन हमारे संसार को किस प्रकार निरन्तर प्रभावित करता है ?

शब्द सहायता

स्वर्गारोहण - ऊपर जाना, ऊपर उठाया जाना। स्वर्गारोहण वह घटना थी, जब यीशु को मृतकों में से जी उठने के पश्चात परमेश्वर के साथ रहने के लिए स्वर्ग में वापस बुला लिया गया।

ईश्वरीय - परमेश्वर; परमेश्वर का स्वभाव; परमेश्वर होना।

वंशावली - पूर्वजों की सूची। यीशु की वंशावली (मत्ती 1:1-16) से पता चलता है कि जिसके आने का वायदा परमेश्वर ने भविष्यवाणियों में किया था, यह वही था।

प्रभु का दिन - सप्ताह का पहला दिन (रविवार) नये नियम की कलीसिया के द्वारा आराधना के लिए ठहराया गया (प्रेरितों 20:7)।

प्रभु-भोज - यीशु के द्वारा स्थापित एक यादगारी भोज, जिसमें अखमीरी रोटी खाना और दाख का रस (अंगूर का रस) पीना शामिल है (देखिए 1 कुरिन्थियों 11:20, 23-26)। नये नियम की कलीसिया हर सप्ताह के पहले दिन यह भोज लेती है।

पुनरुत्थान - किसी मृतक व्यक्ति का फिर से जीवित हो जाना। (यीशु का) पुनरुत्थान इसका प्रमाण है कि यीशु का मृत्यु पर अधिकार है और यह कि जो उसके पीछे चलते हैं, वे पृथ्वी पर अपने इस जीवन के बाद उसके साथ सदा तक जीवित रह सकेंगे।

5

पवित्र आत्मा कौन है?

प्रश्न यह नहीं कि ''पवित्र आत्मा क्या है?'' बल्कि, प्रश्न यह है कि ''पवित्र आत्मा कौन है?'' यह प्रश्न इसलिए है क्योंकि पवित्र आत्मा एक जीव है, उसकी अपनी पहचान है, और वह परमेश्वरत्व में तीसरा सदस्य है। बल या सामर्थ से बढ़कर; वह तो स्वर्गीय प्राणी है।

वह एक व्यक्ति जैसा ही है

बाइबल में उपलब्ध सभी जानकारियां इस तथ्य की ओर ध्यान दिलाती हैं कि पवित्र आत्मा एक ईश्वरीय व्यक्ति है। उसमें भी पिता और पुत्र के जैसे ही अपने विशेष गुण हैं।

उसमें एक व्यक्ति के गुण हैं

पवित्र आत्मा के गुणों से यह पता चलता है कि वह केवल प्रभाव न होकर, जीवित व्यक्ति है, उसका अपना व्यक्तित्व है:

1. *वह निर्णय देता है:* ''पवित्र आत्मा को,... ठीक जान पड़ा ...'' (प्रेरितों के काम 15:28क)।

2. *वह समझ रखता है:* ''और मनों का जांचने वाला जानता है, कि आत्मा की मनसा क्या है?'' (रोमियों 8:27क)।

3. *वह इच्छा करता है:* ''परन्तु यह सब प्रभावशाली कार्य वही एक आत्मा करवाता है और जिसे चाहता है वह बांट देता है'' (1 कुरिन्थियों 12:11)।

4. *उसे ज्ञान है:* ''वैसे ही परमेश्वर की बातें भी कोई नहीं जानता, केवल परमेश्वर का आत्मा'' (1 कुरिन्थियों 2:11ख)।

5. *उसकी भावनाएं हैं (प्रेम, शोक, आनन्द):* ''और हे भाइयो; मैं यीशु मसीह का, जो हमारा प्रभु है और पवित्र आत्मा के प्रेम का स्मरण दिला कर, तुम से बिनती करता हूं, कि मेरे लिए प्रार्थना करने में मेरे साथ मिलकर लौलीन रहो'' (रोमियों 15:30); ''और परमेश्वर के पवित्र आत्मा को शोकित मत करो, जिससे तुम पर छुटकारे के दिन के लिए छाप दी गई है'' (इफिसियों 4:30); ''और तुम बड़े क्लेश में पवित्र आत्मा के आनन्द के साथ वचन को मानकर हमारी और प्रभु की सी चाल चलने लगे'' (1 थिस्सलुनीकियों 1:6)।

पवित्र आत्मा में इन गुणों का होना यह प्रकट करता है कि वह एक व्यक्ति है।

वह एक व्यक्ति जैसे ही काम करता है

पवित्र आत्मा केवल प्रभाव नहीं बल्कि एक व्यक्ति की तरह काम करता है। वह निम्नलिखित कार्य कर सकता है:

1. *वह सिखा सकता है और स्मरण दिला सकता है:* ''परन्तु सहायक अर्थात पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा, और जो कुछ मैंने तुम से कहा है, वह सब तुम्हें स्मरण कराएगा'' (यूहन्ना 14:26)।

2. *वह गवाही देता है:* ''परन्तु जब वह सहायक आएगा, जिसे मैं तुम्हारे पास पिता की ओर से भेजूंगा, अर्थात सत्य का आत्मा जो पिता की ओर से निकलता है, तो वह मेरी गवाही देगा'' (यूहन्ना 15:26)।

3. *वह सत्य का मार्ग बताता है:* ''परन्तु जब वह अर्थात सत्य का आत्मा आएगा, तो वह तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा'' (यूहन्ना 16:13क)।

4. *वह बोलता है:* ''क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा'' (यूहन्ना 16:13ख; प्रेरितों 8:29; 11:12; 1 तीमुथियुस 4:1 भी देखें)।

5. *वह सुनता है:* ''परन्तु जो कुछ सुनेगा, वही कहेगा'' (यूहन्ना 16:13ग)।

6. *रहस्यों को प्रकट करता है:* ''और आने वाली बातें तुम्हें बताएगा'' (यूहन्ना 16:13घ)।

7. *वह मना करता है:* ''और वे फ्रूगिया और गलतिया देशों में से होकर गए, और पवित्र आत्मा ने उन्हें एशिया में वचन सुनाने से मना किया'' (प्रेरितो 16:6)।

8. *वह जीवन देता है:* ''जिसने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया, वह तुम्हारी

मरनहार देहों को भी अपने आत्मा के द्वारा जो तुम में बसा हुआ है जिलाएगा'' (रोमियों 8:11ख)।

9. *वह प्रकट करता है:* ''परन्तु परमेश्वर ने उनको अपने आत्मा के द्वारा हम पर प्रकट किया'' (1 कुरिन्थियों 2:10क; इफिसियों 3:3-5 देखें)।

10. *वह जांचता है:* ''क्योंकि आत्मा सब बातें; वरन परमेश्वर की गूढ़ बातें भी जांचता है'' (1 कुरिन्थियों 2:10ख)।

11. *वह प्रतिज्ञा करता है:* ''यह इसलिए हुआ, कि इब्राहीम की आशीष मसीह यीशु में अन्य जातियों तक पहुंचे, और हम विश्वास के द्वारा उस आत्मा को प्राप्त करें, जिसकी प्रतिज्ञा हुई है'' (गलतियों 3:14; देखें प्रेरितों 2:33)।

12. *वह संगति करता है:* ''प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह और परमेश्वर का प्रेम और पवित्र आत्मा की सहभागिता तुम सबके साथ होती रहे'' (2 कुरिन्थियों 13:14; फिलिप्पियों 2:1 भी देखें)।

13. *वह निवेदन करता है:* ''... परन्तु आत्मा आप ही ऐसी आहें भर भरकर जो बयान से बाहर हैं, हमारे लिए बिनती करता है ... क्योंकि वह पवित्र लोगों के लिए परमेश्वर की इच्छा के अनुसार बिनती करता है'' (रोमियों 8:26, 27)।

14. *वह संकेत करता और होने वाली बातें पहले ही बता देता है:* ''मसीह का आत्मा जो उनमें था, और पहले ही से मसीह के दुखों की और उनके बाद होने वाली महिमा की गवाही देता था।'' (1 पतरस 1:11)।

15. *वह निमन्त्रण देता है:* ''और आत्मा, और दुल्हन दोनों कहती हैं, आ'' (प्रकाशितवाक्य 22:17क)।

16. *वह मार्गदर्शन करता है:* ''फिर, यीशु पवित्रात्मा से भरा हुआ, यरदन से लौटा; और आत्मा के सिखाने से जंगल में फिरता रहा'' (लूका 4:1); ''इसलिए कि जितने लोग परमेश्वर के आत्मा के चलाए चलते हैं, वे ही परमेश्वर के पुत्र हैं'' (रोमियों 8:14)।

एक व्यक्ति इन कामों को कर सकता है, जबकि यह बात केवल प्रभाव के वश की नहीं। इस कारण पवित्र आत्मा को एक व्यक्ति के रूप में देखा जाना चाहिए।

उसके साथ दुर्व्यवहार हो सकता है

पवित्र आत्मा का अनादर और उसे चोट पहुंचाने के लिए प्रयुक्त शब्द, किसी निर्जीव, सामर्थ, प्रभाव या शक्ति के विरुद्ध की जाने वाली बुराई नहीं बल्कि आमतौर

पर उन्हें किसी व्यक्ति के साथ दुर्व्यवहार की तरह माना जाता है। उसके साथ इस प्रकार से दुर्व्यवहार तो सकता है:

1. *उसकी निन्दा हो सकती है:* ''...पर आत्मा की निन्दा क्षमा न की जाएगी ... जो कोई पवित्र आत्मा के विरोध में कुछ कहेगा, उसका अपराध न तो इस लोक में और न परलोक में क्षमा किया जाएगा'' (मत्ती 12:31, 32)।

2. *उसके साथ झूठ बोला जा सकता है:* ''परन्तु पतरस ने कहा, हे हनन्याह! शैतान ने तेरे मन में यह बात क्यों डाली कि तू पवित्र आत्मा से झूठ बोले ... ?'' (प्रेरितों 5:3क)।

3. *उसका सामना हो सकता है:* ''हे हठीले और मन और कान के खतना रहित लोगो, तुम सदा पवित्र आत्मा का सामना करते हो'' (प्रेरितों 7:50ख)।

4. *उसे शोकित किया जा सकता है:* ''और परमेश्वर के पवित्र आत्मा को शोकित मत करो, जिससे तुम पर छुटकारे के दिन के लिए छाप दी गई है'' (इफिसियों 4:30)।

5. *उसका अपमान या तिरस्कार हो सकता है:* ''... और अनुग्रह के आत्मा का अपमान किया'' (इब्रानियों 10:29)।

6. *उसे बुझाया जा सकता है:* ''आत्मा को न बुझाओ'' (1 थिस्सलुनीकियों 5:19)।

इन वाक्यों से, जो बताते हैं कि कैसे पवित्र आत्मा के साथ दुर्व्यवहार हो सकता है, यह पता चलता है कि वह एक व्यक्ति है। सामान्यत: कविता या प्रतीकात्मक संदर्भ को छोड़कर शक्तियों या प्रभावों के साथ हुए दुर्व्यवहार का वर्णन इस प्रकार से नहीं किया जाता। इन पदों के संदर्भों से कोई संकेत नहीं मिलता कि इनकी भाषा प्रतीकात्मक है।

उसका अपना अस्तित्व है

एक और संकेत कि पवित्र आत्मा एक व्यक्ति है, वह यह है कि उसका उल्लेख केवल पिता और पुत्र के साथ उनके स्वभाव और चरित्र के साथ ही नहीं किया गया, बल्कि उसका अपना निश्चित और पृथक अस्तित्व भी है।

यीशु के बपतिस्मा लेने पर उस पर उतरते हुए उसका उल्लेख किया गया है (यूहन्ना 1:33)। जब पुत्र बपतिस्मा लेकर पानी से बाहर आया, तो आत्मा उस पर उतरा और पिता आकाश से बोला (मत्ती 3:16, 17; लूका 3:21, 22)। पिता स्वर्ग में

था, पुत्र पृथ्वी पर था, और आत्मा यीशु के साथ रहने के लिए आ गया।

कोई व्यक्ति यीशु का विरोध करे तो उसे क्षमा मिल सकती है परन्तु यदि वह पवित्र आत्मा का विरोध करे तो, उसे क्षमा नहीं मिल सकती (मत्ती 12:32)। यदि वे दोनों एक ही व्यक्ति हैं तो यह कैसे हो सकता है कि कोई यीशु का विरोध तो करे परन्तु पवित्र आत्मा का विरोध नहीं? यह शिक्षा देते समय, यीशु ने अवश्य ही दोनों की अलग पहचान को ध्यान में रखा होगा।

लूका 4:1 में कहता है कि यीशु पवित्र आत्मा से भरा हुआ था, बिल्कुल वैसे ही जैसे औरों के बारे में कहा गया कि वे पवित्र आत्मा से परिपूर्ण थे (प्रेरितों 6:3, 5; 7:55; 11:24)। निश्चय ही हम, इससे सहमत होंगे कि प्रेरितों के काम की पुस्तक में जो लोग पवित्र आत्मा से भरपूर थे, वे पवित्र आत्मा नहीं थे। यीशु और पवित्र आत्मा को भी अलग अलग व्यक्ति के रूप में पहचाना जाना चाहिए।

यूहन्ना ने लिखा कि पवित्र आत्मा अभी नहीं मिला था (यूहन्ना 7:39), क्योंकि यीशु महिमा को नहीं पहुंचा था। यह तब की बात है जब यीशु पृथ्वी पर प्रेरितों के साथ ही था। यदि अब तक उन्हें पवित्र आत्मा नहीं मिला था तो इसका अर्थ यह हुआ कि पवित्र आत्मा अवश्य ही कोई और था जो यीशु से भिन्न था।

यूहन्ना 14:16 में यीशु ने कहा था, कि उसने प्रेरितों के लिए ''एक और सहायक'' भेजना था जो कि (यूहन्ना 14:26 के अनुसार) पवित्र आत्मा ही होना था। यीशु उनके पास ''एक और'' सहायक कैसे भेज सकता था यदि वह ही सहायक था? इसी प्रकार, यदि यीशु और पवित्र आत्मा एक ही हैं तो पवित्र आत्मा को ''एक और'' सहायक कैसे माना जा सकता है?

यीशु ने कहा कि जब तक वह चला नहीं जाता तब तक उसने पवित्र आत्मा को नहीं भेजना था (यूहन्ना 16:7), उसने यह भी कहा कि पवित्र आत्मा ने अपनी ओर से कुछ नहीं कहना था, बल्कि वही कुछ कहना था, जो उसने यीशु से सुनना था (यूहन्ना 16:13)। नये नियम में यीशु और पवित्र आत्मा के बारे में दी गई जानकारी से यह पता चलता है कि वे दो स्वतन्त्र, अलग अलग स्वर्गीय व्यक्ति हैं।

वह ईश्वरीय है

पवित्र आत्मा का उल्लेख पिता और पुत्र के साथ, उनकी तरह ही, एक समान महत्व के साथ किया गया है। लोगों को पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से

बपतिस्मा दिया जाता है (मत्ती 28:19)। पौलुस ने 2 कुरिन्थियों 13:14 में इन तीनों का एक समान उल्लेख किया है: ''प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह और परमेश्वर का प्रेम और पवित्र आत्मा की सहभागिता तुम सब के साथ होती रहे।''

आत्मा, परमेश्वर (''पिता''; 1 कुरिन्थियों 8:6), और प्रभु (''यीशु''; 1 कुरिन्थियों 8:6) ही वे आत्मिक दान देते हैं (1 कुरिन्थियों 12:4-6) जिनके बारे में कहा जाता है कि वे आत्मा की इच्छा से दिए गए (1 कुरिन्थियों 12:11)।[1]

नये नियम की साक्षी स्पष्ट और शक्तिशाली ढंग से दिखाती है कि पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा एक ही स्वभाव के स्वर्गीय व्यक्तित्व हैं। एक दूसरे के साथ अपने सम्बन्ध में और मनुष्य की सेवा में मिलकर वे एक हैं।

जो विशेषताएं केवल परमेश्वर की हैं वे ही पवित्र आत्मा में भी हैं। उन पांच विशेष गुणों की ओर ध्यान दें जो पिता और पुत्र के भी हैं:

1. *वह अनादि है:* बाइबल के निम्नलिखित वाक्य इनके सनातन स्वभाव के बारे में बताते हैं: (1) पवित्र आत्मा- ''तो मसीह का लोहू जिसने अपने आपको सनातन आत्मा के द्वारा परमेश्वर के सामने निर्दोष चढ़ाया, तुम्हारे विवेक को मरे हुए कामों से क्यों न शुद्ध करेगा, ताकि तुम जीवते परमेश्वर की सेवा करो?'' (इब्रानियों 9:14); (2) पिता- ''हे यहोवा, तेरी राजगद्दी अनादिकाल से स्थिर है, तू सर्वदा से है'' (भजन संहिता 93:2); और (3) यीशु- ''यीशु मसीह कल और आज और युगानुयुग एक सा है'' (इब्रानियों 13:8); ''वरन इस रीति से तुम हमारे प्रभु और उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह के अनन्त राज्य में बड़े आदर के साथ प्रवेश करने पाओगे'' (2 पतरस 1:11)।

2. *वह सब कुछ जानता है:* बाइबल में यह ज्ञान इनके सम्बन्ध में दिया गया है: (1) पवित्र आत्मा - ''परन्तु परमेश्वर ने उनको अपने आत्मा के द्वारा हम पर प्रकट किया; क्योंकि आत्मा सब बातें, वरन परमेश्वर की गूढ़ बातें भी जानता है'' (1कुरिन्थियों 2:10); (2) पिता - ''और सृष्टि की कोई वस्तु उससे छिपी नहीं है वरन जिससे हमें काम है, उसकी आंखों के सामने सब वस्तुएं खुली और बेपरद हैं'' (इब्रानियों 4:13); और (3) यीशु - ''परन्तु यीशु ने अपने आप को उनके भरोसे पर नहीं छोड़ा, क्योंकि वह सबको जानता था और उसे प्रयोजन न था, कि मनुष्य के विषय में कोई गवाही दे, क्योंकि वह आप ही जानता था, कि मनुष्य के मन में क्या है?'' (यूहन्ना 2:24, 25)।

3. *वह सर्वशक्तिमान है:* बाइबल के बहुत से पद इस शक्ति के विषय में बताते हैं

जो सब से ऊपर है: (1) पवित्र आत्मा – ''पवित्र आत्मा तुझ पर उतरेगा, और परम प्रधान की सामर्थ तुझ पर छाया करेगी'' (लूका 1:35ख); ''फिर यीशु आत्मा की सामर्थ से भरा हुआ गलील को लौटा'' (लूका 4:14क); ''परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ पाओगे'' (प्रेरितों 1:8क); (2) परमेश्वर – ''क्योंकि जो वचन परमेश्वर की ओर से होता है वह प्रभाव रहित नहीं होता'' (लूका 1:37); और (3) यीशु – ''... स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है'' (मत्ती 28:18)।

4. *वह हर जगह विद्यमान है:* हर जगह विद्यमान होने की योग्यता इनमें है: (1) पवित्र आत्मा – ''मैं तेरे आत्मा से भागकर किधर जाऊं?'' (भजन संहिता 139:7क); (2) पिता – ''क्या परमेश्वर सचमुच पृथ्वी पर वास करेगा, स्वर्ग में वरन सबसे ऊंचे स्वर्ग में भी तू नहीं समाता'' (1 राजा 8:27क); ''फिर यहोवा की यह वाणी है, क्या कोई ऐसे गुप्त स्थानों में छिप सकता है, कि मैं उसे न देख सकूं? क्या स्वर्ग और पृथ्वी दोनों मुझ से परिपूर्ण नहीं?'' (यिर्मयाह 23:24); और (3) यीशु – ''मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूं'' (मत्ती 28:20ख)।

5. *उसमें सृजनात्मक शक्ति है:* बाइबल के पद परमेश्वरत्व के प्रत्येक सदस्य को सृष्टिकर्त्ता के रूप में प्रस्तुत करते हैं: (1) पवित्र आत्मा – ''... परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर मण्डलाता था'' (उत्पत्ति 1:2); (2) पिता – ''उसी ने पृथ्वी को अपनी सामर्थ से बनाया, और जगत को अपनी बुद्धि से स्थिर किया; और आकाश को अपनी प्रवीणता से तान दिया है'' (यिर्मयाह 51:15); और (3) पुत्र – ''क्योंकि उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई, स्वर्ग की हों अथवा पृथ्वी की, देखी या अनदेखी, क्या सिंहासन, क्या प्रभुताएं, क्या प्रधानताएं, क्या अधिकार, सारी वस्तुएं उसी के द्वारा और उसी के लिए सृजी गई हैं'' (कुलुस्सियों 1:16)।

सारांश

पवित्र आत्मा का वर्णन उन्हीं बातों से किया गया है, जो केवल परमेश्वर के लिए ही कही जा सकती हैं। इन बातों से हम निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि पवित्र आत्मा, पिता और पुत्र के साथ ईश्वरीय स्वभाव में सहभागी है, और पिता और पुत्र के साथ एक है; परन्तु यह कि उसकी अपनी अलग पहचान है। वह बाइबल का महत्वपूर्ण, केन्द्रीय व्यक्ति है।

अध्ययन के लिए प्रश्न

(उत्तर पृष्ठ 234 पर)

1. वर्णन करें कि प्रश्न ''पवित्र आत्मा क्या है?'' के बजाय ''पवित्र आत्मा कौन है?'' क्यों होना चाहिए।
2. वे पांच गुण कौन से हैं जिनसे पता चलता है कि पवित्र आत्मा एक जीवित ''व्यक्ति'' है?
3. यह तथ्य कि पवित्र आत्मा के साथ दुर्व्यवहार हो सकता है, किस प्रकार पता देता है कि वह एक व्यक्ति है?
4. पवित्र आत्मा के कौन से गुण पिता और पुत्र के साथ साझे हैं?

शब्द सहायता

सहज गुण - विशेषताएं या विशेष गुण। रोमियों 1:20 कहता है, ''क्योंकि उसके अनदेखे गुण, अर्थात उसकी सनातन सामर्थ और परमेश्वरत्व जगत की सृष्टि के समय से उसके कामों के द्वारा देज़ने में आते हैं, यहां तक कि वे निरुत्तर हैं।''

चमत्कारी दान - परमेश्वर की ओर से दी गई विशेष योग्यताएं- जैसे अन्य-अन्य भाषाएं बोलना, चंगाई, और भविष्यवाणी, जो नये नियम के लिखने के पूरा होने से पहले कलीसिया को दी गई। इन दानों की अब आवश्यकता नहीं है अथवा वे अब नहीं हैं। (देखिए इफिसियों 4:5; मत्ती 28:18-20)।

आज मसीहियों में पवित्र आत्मा का काम

1. वह हमें पाप और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतन्त्र करता है (रोमियों 8:2-8)।
2. वह हमारा पुनरुत्थान करेगा (रोमियों 8:11)।
3. वह हमारी प्रार्थनाओं में सहायता करता है (रोमियों 8:26; इफिसियों 6:18)।
4. वह हमारे लिए निवेदन करता है (रोमियों 8:26, 27)।
5. वह हमारी अगुआई करता है (रोमियों 8:14)।
6. वह छुटकारे के दिन के लिए हम पर छाप लगाता है (2 कुरिन्थियों 1:22; इफिसियों 1:13, 14; 4:30)।
7. उसकी संगति हमारे साथ है (2 कुरिन्थियों 13:14)।
8. वह हमें पिता तक पहुंचाता है (इफिसियों 2:18)।
9. वह भीतरी मनुष्यत्व को सामर्थ देता है (इफिसियों 3:16)।
10. वह एकता लाता है (इफिसियों 4:3)।
11. वह हमें पवित्र करता है (2 थिस्सलुनीकियों 2:13)।

---

[1]चमत्कारी दान अब नहीं रहे। इसके बारे में हम 1 कुरिन्थियों 13:8-13 के स्पष्ट कथन से आश्वस्त हो सकते हैं। 1 कुरिन्थियों के तीन अध्यायों (12-14) में पौलुस की चर्चा मिलती है। इस चर्चा के मध्य में, उसने घोषणा की कि प्रेम किसी भी चमत्कारी दान से उत्तम है (13:1-3)। फिर उसने प्रेम का वर्णन किया (13:4-7)। अध्याय के अन्तिम भाग में (13:8-13), उसने दिखाया कि प्रेम जो कि एक महानतम दान है, वह आत्मिक दानों के बाद भी रहना था। पौलुस कह रहा था, ''भविष्यवाणियां हों, तो समाप्त हो जाएंगी; भाषाएं हों तो जाती रहेंगी, (चमत्कारी) ज्ञान हो, तो मिट जाएगा।'' इन दानों के कारण पौलुस को कहना पड़ा था कि, ''हमारा ज्ञान अधूरा है, और हमारी भविष्यवाणी अधूरी; परन्तु जब सर्वसिद्ध आएगा तो अधूरा मिट जाएगा'' (पद 9, 10)। ''सर्वसिद्ध'' के आने पर ये चमत्कारी दान बन्द हो जाने थे।

क्योंकि ''सर्वसिद्ध'' का अर्थ सज़्पूर्ण है, इसलिए इसकी तुलना उसके साथ हो जाती है जो ''अधूरा'' है। ''अधूरा'' वह चमत्कारी ज्ञान और भविष्यवाणी है, जिसके द्वारा मौखिक रूप से परमेश्वर का वचन प्रकट हुआ। फिर तो, यह मानना बहुत ही स्वाभाविक है कि सज़्पूर्ण या ''सर्वसिद्ध'' परमेश्वर का वह प्रकाशन है जो नये नियम में लिखकर मनुष्य के लिए दिया गया है। परमेश्वर की इच्छा का यह सज़्पूर्ण प्रकाशन, ''विश्वास... जो पवित्र लोगों को एक ही बार सौंपा गया था'' (यहूदा 3), पहली शताब्दी के अन्त तक मिल गया। जब ''सज़्पूर्ण'' आया तो ''अधूरा'' जाता रहा। क्योंकि नये नियम में परमेश्वर की सज़्पूर्ण इच्छा दर्ज है (2 तीमुथियुस 3:16, 17; 2 पतरस 1:3), इसलिए और अधिक प्रकाशन के लिए चमत्कारी दानों की आवश्यकता नहीं है। (फिलसैंडर्स, ''डज़ ऐनीवन हैव मिरेकुलस गिज़्ट्स टुडे ?'' (क्या आज किसी के पास चमत्कारी दान है? ट्रुथ फ़ॉर टुडे का अंग्रेज़ी संस्करण [अप्रैल 1995]: 49)।